

अध्याय तृतीय  
शोध प्रविधि तथा प्रक्रिया

## अध्याय तृतीय

### शोध प्रविधि

#### 3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान या शोधकार्य में निश्चित और सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा ही शोधकार्य में निश्चित दिशा प्रदान करती है। इसमें प्रतिदर्श चयन कि अपनी विशेष भूमिका रहती हैं। इसके बाद उपकरणों एवं तकनीकी का चयन भी महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इसी आधार पर तो प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। इसके पश्चात् उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता हैं। तब कहीं जाकर शोधकार्य पूरा होता है।

#### अध्ययन प्रविधि

इस अनुसंधान में मिश्रित अनुसंधान प्रविधि का प्रयोग किया गया है, मिश्रित अनुसंधान प्रविधि में गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुसंधान दोनों ही प्रविधियों का उपयोग किया जाता है।

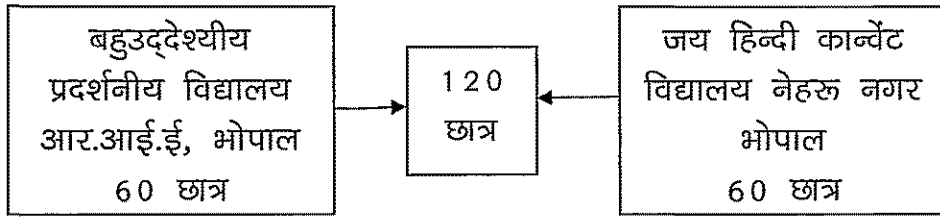
#### 3.2. न्यादर्श का चयन

किसी भी शोधकार्य का सामान्यीकरण उसके न्यादर्श पर निर्भर करता हैं। प्रतिनिधित्व न्यादर्श का चुनाव प्रायः वांछनीय होता हैं। आकड़ों पर आधारित तथ्य सदैव व्यवहारिक होते हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि आकड़े कहा से प्राप्त करें? इसके पहले न्यादर्श तय करना पड़ता हैं। शिक्षाविदों के अनुसार शोधरूपी भवन का आधार न्यादर्श ही हैं। जितना मजबूत आधार होगा भवन रूपी शोध उतना ही पुष्ट होगा।

करलिंगर के अनुसार - “प्रतिदर्श जनसंख्या या लोक में से लिया गया कोई भाग होता हैं जो जनसंख्या या लोक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है।”

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने न्यादर्श चयन “यादृच्छिक न्यादर्श” विधि से किया है। इसके अंतर्गत म.प्र. राज्य के भोपाल संभाग के दो स्कूलों को चयन किया गया। जिसमें एक स्कूल

शासकीय व एक अशासकीय विद्यालय हैं। तथा प्रत्येक विद्यालय से 60-60 बच्चों का चयन किया गया। अतः इस तरह 120 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।



### 3.3. शोध के चर

निम्नलिखित चरों का उपयोग प्रस्तुत अध्ययन के लिये किया गया है।

1. स्वतंत्र चर - मुक्त बालक, अमुक्त बालक
2. आश्रित चर - शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक उपलब्धि

### 3.4 लघुशोध संबंधित उपकरण का विवरण

किसी भी शोधकार्य में उपकरणों का बहुत महत्व होता है। क्योंकि इन उपकरणों का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए, जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सके।

प्रस्तुत लघुशोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा मार्गदर्शक के निर्देश में प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इस प्रश्नावली में 50 प्रश्न शामिल हैं। इन प्रश्नों को दो भागों, भाग-1 व भाग-2 में विभाजित किया गया है। तथा इन भागों में बालक के मुक्त तथा अमुक्त प्रवृत्ति से संबंधित प्रश्न शामिल है तथा अलग से एक उत्तर पत्रिका जिसमें सही व गलत के संकेत में दर्शाने वाले खण्ड हैं। प्रत्येक सही उत्तर का एक अंक है। विद्यार्थी को जिस खण्ड में ज्यादा अंक प्राप्त हुये उस विद्यार्थियों को उस श्रेणी में वर्गीकृत कर दिया गया है।

तालिका 3.1  
प्रश्नावली की संरचना का विवरण

प्रश्नावली		कुल
मुक्त	अमुक्त	
25	25	50

### 3.5 उपकरणों का प्रशासन

इन उपकरणों के समस्त प्रशासन के लिये दस दिन का समय लगा। फिल्ड वर्क के दौरान दो विद्यालयों (शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों) के 120 विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नावली भरवाई गई। प्रश्नावली से पहले विद्यार्थियों को उचित दिशानिर्देश प्रदान किये गये।

विद्यार्थियों को उपकरण संबंधित निम्नलिखित निर्देश दिये गये।

- (1) इस परीक्षण में कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के सामने दो विकल्प- “हाँ” और “नहीं” लिखा है। आपके संबंध में जो विकल्प उपयुक्त हो उसके खाने में (✓) का निशान लगाइये। आपके उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे। इसलिये निःसंकोच उत्तर दीजिये।
- (2) इस परीक्षण को पूरा करने के लिये कोई समय सीमा नहीं है फिर भी आप इसे शीघ्र से शीघ्र पूरा करने का प्रयास कीजिए।
- (3) जहाँ कोई बात समझ में न आये, परीक्षक से पूछ लीजिए।

#### 3.5.1 प्रदत्तों का संकलन

लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता ने शोध से संबंधित आकड़ों का संकलन करने के लिये भोपाल संभाग के शासकीय व अशासकीय विद्यालय को शामिल किया गया है। सर्वप्रथम प्रदत्तों के संकलन हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा विद्यार्थियों से प्रश्नावली भरवाई गई तथा उनके शैक्षिक वह सह-शैक्षिक संबंधित आकड़े प्रधानाचार्य कि अनुमति से लिये गये।

शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक संबंधित आकड़े विद्यार्थियों के गतवर्ष से संबंधित हैं। जिनका प्रयोग अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया है।

### 3.6 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध समस्या से संबंधित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरांत उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। जिससे निष्कर्षों तथा परिणामों की विश्वसनीयता एवं वैद्य रूप में प्रस्तुत किया जा सकें। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु “टी” परीक्षण का प्रयोग किया गया है।